Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A Multidisciplinary, Peer Reviewed and Refereed Research Journal)
Vol. 2, Issue.XI, November 2023, PSR-2311001

बी. एड्. प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों की नैतिक जिम्मेदारी का तुलनात्मक अध्ययन (वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विशेष संदर्भ में)

शोधकर्ता

अर्चना शुक्ला
एम.ए. एजुकेशन

निर्देशक

डॉ. एस.के. त्रिपाठी
सहा. प्राध्यापक
शा. शिक्षा महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

परिचय

प्रजातान्त्रिक समाज के सुचारू संचालन में उसके नागरिक के मूलभूत अधिकारों की सुरक्षा आवश्यक है। प्रत्येक नागरिक के मूलभूत अधिकार उसके कर्तव्य निर्वहन में सहायक है। प्रजातान्त्रिक सामाजिक संरचना में किसी एक व्यक्ति द्वारा उसके कर्तयों का निर्वाहन अन्य किसी दूसरे व्यक्ति का अधिकार होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्य के प्रति सजगता आवश्यक है। एक संवैधानिक प्रजातान्त्रिक समाज के स्थान में प्रत्येक नागरिक के उनके कर्त्तव्यों के निर्वहन में वैज्ञानिक अभिवृति की सजगता आवश्यक है। इसीलिए वैज्ञानिक अभिवृति को विधान के नागरिकों के मूलभूत कर्तव्य–51 के रूप में सम्मिलित किया गया है. जिससे नागरिक लोकसेवा सामाजिक एवं व्यावसायिक दायित्वों के संदर्भ में अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति चितन का एक तरीका है जो विशिष्ट व्यक्ति विचार परिस्थिति स्थान एवं वस्तुओं के प्रति अनुकूल अथवा प्रतिकूल व्यवहार करने की स्थाई प्रतिक्रिया प्रवृत्ति है। जिसमें वस्तुनिष्ठता, तार्किकता उदारमनोवृत्ति ईमानदारी, अंधविश्वास के प्रति दुराग्रह, निर्णय में अस्थिरता, जिज्ञासा, नवीनता कल्पनाशीलता तथा धैर्य आदि संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं व्यवहारात्मक संघटन के रूप में सम्मिलित होते हैं। ये अभिव्यक्ति व्यक्ति आचरण के नियमों का संकेत देती जो नैतिकता से भी संबंधित है। प्रत्येक व्यक्ति अपने संरक्षण के लिए कुछ ऐसे कार्य जिनसे अपनी जीविका सुरक्षित कर लेता है वृत्ति कहा जाता है। जिस भी व्यवसाय को व्यक्ति अपनाता है उसके नियमों का पालन करना एवं उसके अनुरूप कार्य करना वृत्तिक नैतिकता कहलाता है।

वृत्तिक नैतिकता की स्पष्टता के लिए हरबर्ट बेडले (1846–1924) का सिद्धांत 'मेरा स्थान तथा तत्सम्बंधी कर्त्तव्य महत्वपूर्ण है। इस सिद्धांत के अनुसार समाज में प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक विशिष्ट स्थान और उस स्थान के अनुकूल उसका कतव्य निश्चित है। मनुष्य

का दायित्व है कि वह अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार समाज में रहकर अपने कर्तव्यों का पालन करें।

इस हेतु प्रत्येक व्यक्ति को अपने कार्य अथवा व्यवसाय का पूरा ज्ञान होना चाहिए। इस संदर्भ में वृतिक नैतिकता के तीन आयाम

(1) अपने कार्य के प्रति पूरी श्रद्धा, जिसे करने के बाद व्यक्ति पूरी सच्चाई से उसका मूल्यांकन कर सके।
(2) व्यक्ति का व्यवहार स्वयं के प्रति व समाज के प्रति।
(3) व्यक्ति का अपने सहकर्मियों के साथ व्यवहार।

उपरोक्त तीनों आयामों के आधार पर व्यक्ति अपने कार्य को पूरी सच्चाई, मेहनत, लगन, कर्तव्य व दायित्वों को ध्यान में रखकर करता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इन्हीं आयामों को ध्यान रखकर शिक्षक को अपना शिक्षण कार्य करना चाहिए, क्योंकि शिक्षा हो व्यक्ति को सम्पूर्ण बनाती है तथा अच्छे समाज, नागरिक व राष्ट्र का निर्माण करती है।

अतः आवश्यक है कि भावी शिक्षकों एवं शिक्षको की अपने कर्तव्यों के प्रति नैतिक जिम्मेदारी का अध्यन वैज्ञानिक अभिवृत्ति के संदर्भ में किया जाए। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन की योजना बनाई गई और समस्या कथन इस प्रकार है ''बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों की नैतिक जिम्मेदारी का तुलनात्मक अध्ययन' (वैज्ञानिक अभिवृत्ति के विशेष संदर्भ में)।

उद्देश्य :

बी.एड प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों में नैतिक जिम्मेदारी के प्रति अभिवृत्ति पर कार्यस्थिति, लिंग एवं उनकी अन्तक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना :

बी.एड प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों में नैतिक जिम्मेदारी के प्रति अभिवृत्ति पर कार्यस्थिति, लिंग एवं उनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव में सार्थक अंतर नही है।

प्रविधि :

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु प्रलेखी विश्लषण तथा कार्य–विश्लेषण विधि प्रयुक्त की गई। न्यादर्श के रूप में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एव 50 शिक्षकों का चयन किया गया। उपकरण के रूप में शोधार्थी द्वारा निर्मित वृत्तिक नैतिकता अभिवृति मापनी का प्रयोग किया गया। इस मापनी में आचार संहिता के आधार पर व्यावसायिक नैतिकता के तीन आयाम लिए गए–

विद्यार्थियों के प्रति, व्यवसाय के प्रति एवं समाज के प्रति इस अभिवृत्ति मापनी में 55 पदो को किया गया। जिसमें 38 अनुकूल कथन तथा 17 प्रतिकूल कथन थे। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु 2x2 कारकीय अभिकल्प प्रसरण का विश्लेषण (2X2 FactorialDesignANOVA) का उपयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण

तालिका क्र.1.1 : बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों में वृत्तिक नैतिकता के प्रति अभिवृत्ति पर कार्यस्थिति, लिंग एवं इनकी अन्तक्रिया के प्रभाव के लिए 2x2 कारकीय अभिकल्प प्रसरण के विश्लेषण का सारांश

स्रोत	df	S.S.	M.S.S.	F
कार्यस्थिति	1	844.641	844.641	9.727**
लिंग	2	1756.889	1756.889	20.232**
कार्यस्थिति x लिंग	1	498.055	498.055	5.735*
त्रुटि	96	8336.484	8336.484	
कुल योग	**99**	**10381.560**		

** 0.01स्तर पर सार्थक ** 0.05स्तर पर सार्थक

तालिका क्र.1.2 : वृत्तिक नैतिकता के प्रति अभिवृत्ति के आयाम व्यवसाय के प्रति दायित्व पर कार्यस्थिति, लिंग एवं इनकी अन्तक्रिया के प्रभाव के लिए 2x2कारकीय अभिकल्प प्रसरण के विश्लेषण का सारांश

स्रोत	df	S.S.	M.S.S.	F
कार्यस्थिति	1	82.444	82.444	5.992**
लिंग	2	54.041	54.041	3.928
कार्यस्थिति x लिंग	1	29.741	29.741	2.160
त्रुटि	96	1320.776	13.758	
कुल योग	**99**	**1426.160**		

** 0.05 स्तर पर सार्थक

तालिका क्र.1.3 : वृत्तिक नैतिकता के प्रति अभिवृत्ति के आयाम समाज के प्रति दायित्व पर कार्यस्थिति, लिंग एवं इनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव के लिए 2x2कारकीय अभिकल्प प्रसरण के विश्लेषण का सारांश

स्रोत	df	S.S.	M.S.S.	F
कार्यस्थिति	1	170.079	170.079	9.870**
लिंग	2	239.059	239.059	13.873**
कार्यस्थिति x लिंग	1	46.988	46.988	2.727
त्रुटि	96	1654.294	17.232	
कुल योग	**99**			

तालिका क्र.1.4 : वृत्तिक नैतिकता के प्रति अभिवृत्ति के आयाम विद्यार्थियों के प्रति कर्तव्य पर कार्यस्थिति, लिंग एवं इनकी अन्तक्रिया के प्रभाव के लिए 2x2 कारकीय अभिकल्प प्रसरण के विश्लेषण का सारांश

स्रोत	df	S.S.	M.S.S.	F
कार्यस्थिति	1	26.567	26.567	1.708
लिंग	2	251.529	251.529	16.169**
कार्यस्थिति x लिंग	1	45.813	45.813	2.945
त्रुटि	96	1493.438	1493.438	
कुल योग	**99**	**1753.790**		

.

** 0.01 स्तर पर सार्थक

उपरोक्त तालिकाओं के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि कुल वृत्तिक नैतिकता एवं व्यवसाय के प्रति दायित्व, समाज के प्रति के दायित्व के संदर्भ में बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षकों में सार्थक अंतर पाया गया। इस संदर्भ में मध्यमानों के आधार पर बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की वृत्तिक नैतिकता और उसके आयाम का स्तर शिक्षको की तुलना में सार्थक उच्च स्तरीय पाया गया। इसी प्रकार महिला बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला शिक्षकों की वृत्तिक नैतिकता समाज के प्रति दायित्व एवं विद्यार्थियों के प्रति कर्तव्य का स्तर पुरुषों की तुलना में सार्थक उच्च स्तरीय पाया गया। कुल वृतिक नैतिकता पर प्रशिक्षण कार्यस्थिति लिंग एवं इनकी अन्य का सार्थक प्रभाव देखा गया। इस संदर्भ म महिला शिक्षक एवं महिला बी.

एड. प्रशिक्षणार्थियों की कुल वतिक नैतिकता का सार समान पाया गया, जबकि पुरुष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को कुल वृतिक नैतिकता का स्तर सार्थक उच्च स्तरीय पाया गया।

प्राप्त परिणामों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बी. एड. प्रशिक्षणार्थी अपने प्रशिक्षण के दौरान नैतिक दायित्वों से परिचित हो रहे होते हैं. इस कारण उनमें सजगता अधिक देखी जाती है. जबकि शिक्षकों को उनके व्यवसाय की स्थितियाँ वातावरण उनके वर्त्तिक नैतिकता को प्रभावित करते है। इस कारण बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की वृत्तिक नैतिकता का स्तर शिक्षकों की तुलना में सार्थक उच्चस्तरीय पाया गया। पुरुषों की तुलना में महिलाएं परिवार एवं कार्यस्थल दोनों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी नैतिकता के साथ करती है। इन दोनों परिणामों का अन्तर्क्रिया पर भी प्रभाव देखा गया।

संदर्भ :

(1) चौरसिया एम.पी. (2006) अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र नई दिल्ली : जैनेन्द्र प्रकाश जैन प्रकाशन
(2) हैनरी ई. गैरेट (2010) शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी लुधियाना कल्याणी पब्लिशर्स
(3) मिश्र, डॉ हृदयनारायण (2011) नीतिशास्त्र के प्रमुख सिद्धान (भारतीय एवं पाश्चात्य) इलाहाबाद :शेखर प्रकाशन
(4) राय, पारसनाथ (2011), अनुसंधान परिचय आगरा : लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन।
(5) शाक्य, डॉ जयप्रकाश (2011) भारतीय नीतिशास्त्र आगरा अशोक प्रकाशन
(6) Best John. W & James (2002) Researh in Education New Delhi :Dorling Kindersley (India) Pvt. Ltd.